# अमृत प्रार्थना
# भगवान से

हे अंतर्यामी! हे सर्व सामर्थशाली!यह जगत, यह संसार यह आपकी माया है। जैसे इस शरीर की छाया होती है जो रहती शरीर के साथ में ही है लेकिन, उसे कोई पकड़ नहीं सकता, उसका कोई अपना स्वरूप नहीं होता,वैसे ही यह जो जगत है, संसार है, हे प्रभु यह आप की छाया है।

और छाया माया के समान है, इसे कोई पकड़ नहीं सकता।

इसे कोई अपना नहीं बना सकता,इसका कोई अपना स्वरूप नहीं होता। वह परिवर्तित होता रहता है| लेकिन मैं, अज्ञानी, भ्रम वश इस माया को ही,छाया को ही जीवन पर पकड़ता रहा।लेकिन आप को पकड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

और केवल इस जीवन में ही नहीं ना जाने कितने अनंत जन्मों में,मैं इसी प्रकार से ही,इस माया में,छाया में ही पड़ा हुआ,उसको पकड़ने का प्रयत्न करता रहा,लेकिन आज तक तो इसे पकड़ नहीं पाया। ना इस शरीर को पकड़ पाया, ना इस संसार को पकड़ पाया। शरीर भी बदलता रहा, संसार को बदलता रहा। लेकिन हर समय आप एक ही थे, एक ही है और एक ही रहेंगे।

अत: हे प्रभु! अब मैं आपकी शरण में आया हूँ।

जब जागे तभी सवेरा! मेरी भूल को, मेरी गलतियों को, मेरे अपराधों को आप ऐसे ही क्षमा करें!जैसे माता-पिता अपने बच्चों के अपराध को क्षमा करते हैं!जैसे सद्गुरु अपने शिष्य के अपराधों को क्षमा करते हैं! जैसे भगवान अपने भक्तों के अपराधों को क्षमा करते हैं!

मेरे उन अनंत कोटि अपराधों को आप क्षमा करें! क्षमा करें! नाथ! आप दया निधान हैं!आप कृपालु हैं! आप की दयालुता,आपकी कृपालुता बड़ी प्रसिद्ध है।

यदि संसार का सबसे बड़ा पापी, सबसे बड़ा राक्षस भी आपकी शरण में आ जाता है, तो आप क्षमा कर देते हैं।

तब मेरे अपराधों को भी क्षमा करें!मेरा मन आप में लगे, आप की भक्ति में लगे,आपके ध्यान में लगे,आपके सत्संग में लगे ऐसी कृपा करें।

मैंने आपके नाम का,आपके ध्यान का सहारा लिया है। अब मेरे मन की बागडोर संभालें।

मुझे मार्ग प्रदान करें! मुझे दर्शन प्रदान करें!

ॐ शांती शांती शांती